

दानियेल की पुस्तक - संख्या एक सौ बीस

भविष्यसूचक संकेतों का अनावरण: बाइबिल की भविष्यवाणियों की पूर्ति को समझना

Jeff Pippenger

2024-03-06

सूर्य, चंद्र और तारों द्वारा प्रतीकित चिन्हों की पूर्ति पर इतिहासकारों, एडवेंटिज़्म के अग्रदूतों तथा सिस्टर वाइट के लेखनों में भरपूर चर्चा की गई है। यीशु ने जिन चिन्हों का उल्लेख किया, उनमें से कुछ अन्य जितने परिचित नहीं हैं। कम ही लोग यह पहचानते हैं कि "पृथ्वी" पर "राष्ट्रों की व्याकुलता" का एक विशिष्ट पूर्तिकरण था। वे इस बात पर स्पष्ट नहीं हैं कि "स्वर्ग की शक्तियों" के "हिलाए जाने" के प्रतीक का आशय क्या है, और यह "पृथ्वी" की शक्तियों के हिलने के प्रतीक से कैसे भिन्न है। और कुछ ही लाओदीकियन एडवेंटिस्ट समझते हैं कि "बादल में आते हुए मनुष्य के पुत्र" का "आगमन" मिलेराइट इतिहास में पूरा हुआ था।

मसीह के आगमन का ठीक-ठीक दिन और समय प्रकट नहीं किया गया है। उद्धारकर्ता ने अपने चेलों से कहा कि वह स्वयं अपने दूसरे आगमन की घड़ी प्रकट नहीं कर सकते थे। परन्तु उन्होंने कुछ ऐसी घटनाओं का उल्लेख किया जिनसे लोग जान सकें कि उनका आगमन निकट है। उन्होंने कहा, 'सूर्य, चंद्रमा और तारों में चिन्ह होंगे।' 'सूर्य अंधकारमय हो जाएगा, चंद्रमा अपना प्रकाश नहीं देगा, और आकाश के तारे गिर पड़ेंगे।' पृथ्वी पर, उन्होंने कहा, 'राष्ट्रों में क्लेश और घोर उलझन होगी; समुद्र और लहरें गर्जना करेंगी; और जो बातें पृथ्वी पर होने वाली हैं, उन्हें देखकर भय के मारे लोगों के दिल बैठ जाएंगे।'

'और वे मनुष्य के पुत्र को आकाश के बादलों पर सामर्थ्य और महान महिमा के साथ आते हुए देखेंगे। और वह अपने स्वर्गदूतों को बड़ी तुरही की ध्वनि के साथ भेजेगा, और वे उसके चुने हुएों को चारों दिशाओं से, आकाश के एक छोर से दूसरे छोर तक, इकट्ठा करेंगे।'

सूर्य, चंद्रमा और तारों में प्रकट होने वाले संकेत पूरे हो चुके हैं। तब से भूकंप, आंधी-तूफान, ज्वारीय लहरें, महामारी और अकाल की घटनाएँ लगातार बढ़ती चली गई हैं। आग और बाढ़ से होने वाली सबसे भयंकर तबाहियाँ एक के बाद एक तेजी से घट रही हैं। सप्ताह-दर-सप्ताह होने वाली ये भयानक आपदाएँ हमें गंभीर चेतावनी के स्वर में बताती हैं कि अंत निकट है, कि शीघ्र ही कोई महान और निर्णायक घटना अनिवार्य रूप से घटित होने वाली है।

अनुग्रह का समय अब अधिक देर तक नहीं चलेगा। अब परमेश्वर पृथ्वी पर से अपना रोकने वाला हाथ उठा रहे हैं। बहुत समय से वह अपने पवित्र आत्मा के माध्यम से स्त्री-पुरुषों से बोलता आया है; पर उन्होंने उस बुलाहट पर ध्यान नहीं दिया। अब वह अपने न्यायों के द्वारा अपने लोगों से और संसार से बोल रहा है। इन न्यायों का समय उन लोगों के लिए दया का समय है जिन्हें अभी तक यह जानने का अवसर नहीं मिला कि सत्य क्या है। प्रभु उन पर करुणा-भरी दृष्टि डालेंगे। उसका दयालु हृदय द्रवित है; उसका हाथ अब भी बचाने के लिए फैला हुआ है। इन अंतिम दिनों में पहली बार सत्य सुनने वाले बहुत से लोग सुरक्षित भेड़शाला में स्वीकार किए जाएंगे। रिव्यू एंड हेराल्ड, 22 नवंबर, 1906.

मिलरवादी इतिहास अंतिम दिनों में एकदम अक्षरशः दोहराया जाता है। पहले स्वर्गदूत के आगमन और इतिहास को चिह्नित करने वाले "चिन्ह" तीसरे स्वर्गदूत के आगमन और इतिहास को चिह्नित करने वाले "चिन्हों" के प्रतिरूप हैं। सभी पवित्र सुधारवादी आंदोलन अंतिम दिनों में तीसरे स्वर्गदूत के आंदोलन के समानांतर चलते हैं।

पृथ्वी पर परमेश्वर का कार्य प्रत्येक महान सुधार या धार्मिक आंदोलन में युग से युग तक एक उल्लेखनीय समानता प्रस्तुत करता है। मनुष्यों के साथ परमेश्वर के व्यवहार के सिद्धांत सदैव समान रहे हैं। वर्तमान के महत्वपूर्ण आंदोलनों के अतीत में समानांतर मिलते हैं, और पूर्व युगों में कलीसिया के अनुभवों में हमारे समय के लिए

अत्यंत मूल्यवान पाठ निहित हैं। महान विवाद, 343.

प्रकाशितवाक्य अठारह के बलवान स्वर्गदूत द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया इतिहास तीसरा स्वर्गदूत है, और तीसरे स्वर्गदूत द्वारा प्रतिनिधित्व किया गया इतिहास मिलराइट इतिहास के पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के इतिहास के समानांतर चलता है।

“परमेश्वर ने प्रकाशितवाक्य 14 के संदेशों को भविष्यवाणी की रेखा में उनका स्थान दिया है, और उनका कार्य इस पृथ्वी के इतिहास के अंत तक समाप्त नहीं होना है। पहले और दूसरे स्वर्गदूत के संदेश अब भी इस समय के लिए सत्य हैं, और जो इसके पश्चात् आता है उसके साथ-साथ चलने वाले हैं। तीसरा स्वर्गदूत अपनी चेतावनी ऊँचे शब्द से घोषित करता है। ‘इन बातों के बाद,’ यूहन्ना ने कहा, ‘मैंने एक और स्वर्गदूत को स्वर्ग से उतरते देखा, जिसके पास बड़ा अधिकार था, और पृथ्वी उसकी महिमा से प्रकाशित हो गई।’ इस प्रकाशन में, तीनों संदेशों का समस्त प्रकाश संयुक्त है।” The 1888 Materials, 803, 804.

पहले और दूसरे स्वर्गदूतों का कार्य, जिसके समानांतर तीसरे स्वर्गदूत का कार्य है, दस कुंवारियों के दृष्टान्त में भी दर्शाया गया है।

“मुझे प्रायः दस कुंवारियों के दृष्टान्त की ओर संकेत किया जाता है, जिनमें से पाँच बुद्धिमान थीं और पाँच मूर्ख। यह दृष्टान्त अक्षरशः पूरा हुआ है और होगा, क्योंकि इसका विशेष अनुप्रयोग इसी समय के लिए है, और तीसरे स्वर्गदूत के संदेश के समान, यह पूरा हुआ है और समय के अंत तक वर्तमान सत्य बना रहेगा।” Review and Herald, August 19, 1890.

प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के अध्याय दस में दर्शाया गया इतिहास “सात गर्जनाओं” के रूप में प्रस्तुत है, और ये सात गर्जनाएँ उन घटनाओं का प्रतिनिधित्व करती हैं जो मिलराइटों के इतिहास के दौरान घटीं, जो पहले और दूसरे स्वर्गदूतों के संदेशों का इतिहास था। सात गर्जनाएँ “भविष्य की घटनाओं” का भी प्रतिनिधित्व करती हैं जो अंतिम दिनों में घटेंगी, और वे उसी “क्रम” में पूरी होंगी जिस क्रम में वे मिलराइटों के इतिहास में पूरी हुई थीं।

जॉन को दी गई वह विशेष ज्योति, जो सात गर्जनों में व्यक्त हुई थी, उन घटनाओं की एक रूपरेखा थी, जो प्रथम और द्वितीय स्वर्गदूतों के संदेशों के अंतर्गत घटित होने वाली थीं। ...

“इन सात गरजनों ने जब अपने शब्द प्रकट कर दिए, तब यूहन्ना को, छोटे पुस्तक के संबंध में, वही आज्ञा दी गई जो दानिय्येल को दी गई थी: ‘जो बातें उन सात गरजनों ने कहीं, उन पर मुहर लगा दे।’ ये भविष्य की उन घटनाओं से संबंधित हैं जो अपने क्रम में प्रकट की जाएँगी।” The Seventh-day Adventist Bible Commentary, volume 7, 971.

सभी सुधार आंदोलन एक-दूसरे के समानांतर चलते हैं, और उन्हें "पंक्ति पर पंक्ति" जोड़ते हुए एक साथ लाया जाना है, ताकि एक लाख चवालीस हजार के अंतिम सुधारवादी आंदोलन का चित्रण किया जा सके। दस कुंवारियों का दृष्टान्त मिलराइट आंदोलन और एक लाख चवालीस हजार के आंदोलन में परमेश्वर की प्रजा के आंतरिक अनुभव को दर्शाता है।

“मत्ती 25 की दस कुंवारियों का दृष्टान्त भी एडवेंटिस्ट लोगों के अनुभव को चित्रित करता है।” The Great Controversy, 393.

मिलरवादी और एक लाख चवालीस हजार, दोनों के कार्य और संदेश का प्रतिनिधित्व प्रकाशितवाक्य अध्याय चौदह के तीन स्वर्गदूत करते हैं।

मुझे अनुभव प्राप्त करने के बहुमूल्य अवसर मिले हैं। मुझे स्वर्गदूतों के प्रथम, द्वितीय और तृतीय संदेशों के संबंध में अनुभव हुआ है। स्वर्गदूतों को स्वर्ग के बीचोबीच उड़ते हुए दर्शाया गया है, जो संसार को चेतावनी का संदेश सुना रहे हैं, और जिनका इस पृथ्वी के इतिहास के अंतिम दिनों में जी रहे लोगों पर सीधा प्रभाव है। इन स्वर्गदूतों

की आवाज़ कोई नहीं सुनता, क्योंकि वे परमेश्वर के उन लोगों का प्रतिनिधित्व करने के लिए एक प्रतीक हैं जो स्वर्गीय ब्रह्मांड के साथ सामंजस्य में कार्य कर रहे हैं। पुरुष और महिलाएँ, जो परमेश्वर की आत्मा से प्रबुद्ध हैं और सत्य के द्वारा पवित्र किए गए हैं, इन तीनों संदेशों को उनके क्रम में घोषित करते हैं। Life Sketches, 429.

प्रकाशितवाक्य अध्याय 10 में प्रस्तुत भविष्यसूचक घटनाएँ सात गर्जन द्वारा दर्शाई गई हैं। वे घटनाएँ उस बिंदु को चिह्नित करती हैं जहाँ दैवीय और मानवीय का मिलन होता है। वे 'चिन्ह' जिनकी पहचान मसीह ने मत्ती अध्याय 24, मरकुस 13 और लूका 21 में की, वे ही 'चिन्ह' हैं जिन्होंने मिलराइट आंदोलन का आरंभ कराया और एक सौ चवालीस हज़ार के आंदोलन के लिए एक समानांतर गवाही प्रस्तुत करते हैं। एक सौ चवालीस हज़ार, हनोक और एलिय्याह द्वारा दर्शाए अनुसार, मृत्यु का स्वाद नहीं चखेंगे। 11 सितंबर, 2001, वह 'चिन्ह' जिसे मसीह ने पृथ्वी के इतिहास की अंतिम पीढ़ी के आगमन को चिह्नित करने वाला बताया, लूका अध्याय 21 में पहचाना गया है। हनोक और एलिय्याह द्वारा प्रतिनिधित्व किए गए, जिन्हें एक सौ चवालीस हज़ार कहा जाता है, उस समूह में शामिल होने के लिए आवश्यक है कि उस 'चिन्ह' और वह जो कुछ दर्शाता है, उसे पहचाना जाए।

मिलेराइट आंदोलन का आरंभ कराने वाले उन "चिन्हों" के इतिहास से होकर जब यीशु अपने शिष्यों को ले चले, तब उन्होंने उसी इतिहास का प्रतिनिधित्व करने वाला एक दृष्टान्त शामिल करके अपनी ऐतिहासिक गवाही को दोहराया और विस्तृत किया।

और उसने उनसे एक दृष्टान्त कहा: अंजीर के पेड़ और सब पेड़ों को देखो; जब वे अब कोंपलें निकालते हैं, तो तुम देखकर आप ही जानते हो कि ग्रीष्म निकट है। इसी प्रकार तुम भी, जब तुम ये बातें होती देखो, तो जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट है। मैं तुम से सच कहता हूँ, यह पीढ़ी तब तक नहीं टलेगी, जब तक ये सब बातें पूरी न हो लें। आकाश और पृथ्वी टल जाएंगे, परन्तु मेरी बातें कभी न टलेगी। लूका 21:29-33.

यीशु दृष्टान्त की शुरुआत "अंजीर का पेड़" (एकवचन) और "सभी पेड़ों" के बीच भेद की पहचान करके करते हैं। "अंजीर का पेड़" वाचा के लोग हैं, जो अंतिम दिनों में "लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म" कहलाते हैं, और अपने आप को परमेश्वर के शेष लोग होने का दावा करते हैं। अन्य "पेड़" अन्यजाति लोग थे।

अंजीर के वृक्ष पर किए गए शाप पर ध्यान दें, जो यहूदी राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करता है—धार्मिक दावे की पत्तियों से आच्छादित, परन्तु उस पर कोई फल नहीं पाया गया। यह शाप उसी अंजीर के वृक्ष पर उच्चारित किया गया, जो नैतिक, विचारशील, जीवित कर्ता का प्रतिनिधित्व करता है—जो परमेश्वर द्वारा शापित है—और इस घटना के बाद यहूदियों की भाँति चालीस वर्षों तक जीवित रहते हुए भी मृत था। ध्यान दें, अन्य वृक्ष, जो अन्यजातियों का प्रतिनिधित्व करते थे, आच्छादित नहीं थे। वे पत्तेहीन थे; वे परमेश्वर का ज्ञान होने का कोई दावा नहीं करते थे। उनके लिए फल देने का समय अभी नहीं आया था। पादरियों और कर्मियों के लिए विशेष साक्ष्य, संख्या 7, 59-61।

अंतिम दिनों में लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म शापित है, क्योंकि वह भले ही अपने को परमेश्वर के शेष बचे हुए लोग होने का दावा करता है, पर उसका यह दावा फलहीन है। इस अंश में यीशु दो आपस में जुड़े, परंतु अलग-अलग बिंदु प्रस्तुत कर रहे हैं। वह परमेश्वर के कहलाने वाले लोगों और उन अन्यजातियों के बीच भेद स्पष्ट कर रहे हैं, जो न तो परमेश्वर की व्यवस्था का पालन करने का दावा करती हैं और न ही भविष्यद्वान्नी की आत्मा रखती हैं—ये वे विशेषताएँ हैं जो अंतिम दिनों के शेष बचे हुए लोगों की पहचान हैं, और जिनका पालन करने का दावा लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म करता है। अंतिम दिनों में पत्ते, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में यूहन्ना द्वारा पहचाने गए शेष होने के लिए गए दावे का प्रतीक हैं।

"पत्तेहीन और फलहीन अंजीर के पेड़ों द्वारा अन्यजाति जगत का प्रतिनिधित्व किया गया था। जैसे यहूदी, वैसे ही अन्यजाति लोग भी भक्ति से वंचित थे, पर उन्होंने यह दावा नहीं किया था कि वे परमेश्वर की कृपा में हैं। वे उच्च आध्यात्मिकता का कोई घमंड नहीं करते थे। परमेश्वर के मार्गों और कार्यों के विषय में वे हर अर्थ में अंधे थे; उनके लिए अंजीरों का समय अभी नहीं आया था। वे अब भी उस दिन की प्रतीक्षा कर रहे थे जो उन्हें प्रकाश और

आशा लाएगा।" समय के संकेत, 15 फरवरी, 1899.

अंजीर के पेड़ और अन्य पेड़ों के बीच एक और भेद मसीह ने बताया। अंजीर के पेड़ में कोंपलें फूटने का समय, अन्यजातियों के पेड़ों में कोंपलें फूटने के समय से भिन्न था। अंतिम दिनों में "कलीसियाओं को दो पृथक बुलाहटें दी जाती हैं," और प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह के स्वर्गदूत की पहली वाणी उस समय की पहचान कराती है जब एक लाख चवालीस हजार के लिए कोंपलें फूटनी थीं। प्रकाशितवाक्य अठारह की "दूसरी वाणी" यह दर्शाती है कि अन्य पेड़ों में कोंपलें कब फूटनी थीं।

मसीह के दिनों में यहूदी अंजीर के पेड़ के समान थे, और अन्यजाति अन्य पेड़ों के समान थे। मिलराइट इतिहास में प्रोटेस्टेंट अंजीर के पेड़ के समान थे, और मिलराइट अन्य पेड़ों के समान थे। अंतिम दिनों में, लाओदीकिया का एडवेंटिज़्म वह फलहीन अंजीर का पेड़ है जिसे यरूशलेम (दाख की बारी) से हटा दिया जाता है, और एक लाख चवालीस हजार वे अंजीर के पेड़ हैं जो फल देते हैं। परमेश्वर के अन्य बच्चे, जो अभी भी बाबुल में हैं, अन्यजातियों के रूप में दर्शाए गए हैं।

'अन्यजाति' की परिभाषा के अनुसार वह 'अजनबी' है। जब अंजीर का वृक्ष कोंपलें निकालकर जीवन पाता है, तब अन्यजातियों के वृक्ष सुप्त (मृत) होते हैं; उन पर न कोंपलें होती हैं, न फल। सुप्त वृक्ष सूखा वृक्ष होता है, और प्रकाशितवाक्य अध्याय अठारह की दूसरी वाणी द्वारा जब अन्यजातियों को बाबुल से बाहर निकलने के लिए बुलाया जाएगा, तब वे सातवें दिन का सब्त मानने का चुनाव करेंगे और प्रभु के साथ वाचा में प्रवेश करेंगे।

और परदेशी का वह पुत्र जो यहोवा से मिल गया है, यह न कहे: "यहोवा ने मुझे अपनी प्रजा से सर्वथा अलग कर दिया है"; और न खोजा यह कहे: "देखो, मैं सूखा वृक्ष हूँ।" क्योंकि यहोवा उन खोजों से यों कहता है जो मेरे विश्रामदिनों का पालन करते हैं, वे बातें चुनते हैं जो मुझे प्रसन्न करती हैं, और मेरी वाचा को दृढ़ता से थामे रहते हैं: मैं उन्हें अपने घर और अपनी दीवारों के भीतर पुत्रों और पुत्रियों से भी उत्तम स्थान और नाम दूँगा; मैं उन्हें ऐसा सदा का नाम दूँगा जो कभी नहीं मिटेगा। और परदेशियों के वे पुत्र भी, जो यहोवा से मिलते हैं ताकि उसकी सेवा करें, यहोवा के नाम से प्रेम करें, और उसके दास बनें, जो विश्रामदिन को अपवित्र होने से बचाए रखते हैं और मेरी वाचा को थामे रहते हैं—उन्हीं को मैं अपने पवित्र पर्वत पर लाऊँगा और अपने प्रार्थना-भवन में उन्हें आनन्दित करूँगा; उनकी होमबलियाँ और उनके बलिदान मेरी वेदी पर स्वीकार किए जाएँगे; क्योंकि मेरा घर सब लोगों के लिए प्रार्थना का घर कहलाएगा। यशायाह 56:3-7.

एक परदेसी "अन्यजाति" होता है, और "दूसरी वाणी" उन्हें बाबुल से बाहर निकलने के लिए बुलाती है, और उन्हें परमेश्वर के पवित्र पर्वत पर लाया जाता है; तब वह उसका "पवित्र" पर्वत होगा, क्योंकि "पहली वाणी" के इतिहास में दर्शाई गई परीक्षण की प्रक्रिया के द्वारा गेहूँ और जंगली घास अलग कर दिए गए होंगे। अंतिम दिनों में जब वे प्रभु के पर्वत पर आएँगे, तब अन्यजाति लोग अब न तो परदेसी रहेंगे, न ही सूखे वृक्ष।

सूर्य और चंद्रमा अंधकारमय हो जाएँगे, और तारे अपनी चमक छिपा लेंगे। यहोवा भी सिंघोन से गरजेंगे, और यरूशलेम से अपनी वाणी उच्चरित करेंगे; और आकाश और पृथ्वी कांप उठेंगे; परन्तु यहोवा अपनी प्रजा की आशा और इस्राएल के पुत्रों की शक्ति होंगे। तब तुम जानोगे कि मैं सिंघोन, अपने पवित्र पर्वत पर वास करने वाला तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ; तब यरूशलेम पवित्र ठहरेगा, और फिर कोई परदेसी उसके भीतर से नहीं गुज़रेगा। योएल 3:15-17.

उस इतिहास का आगमन, जिसमें "दूसरी आवाज़" परमेश्वर की अन्य भेड़ों को बाबुल से बाहर बुलाती है, ऐसे "चिन्हों" के साथ होता है जिन्हें मिलराइट आंदोलन के चिन्हों द्वारा पूर्वचित्रित किया गया था। मत्ती अध्याय चौबीस, मरकुस अध्याय तेरह और लूका अध्याय इक्कीस में, जिस विषय पर हम विचार कर रहे हैं, उस पर मसीह की गवाही प्रस्तुत की गई है। उन तीनों साक्ष्यों में पहचाने गए "चिन्हों" में से एक यह है कि स्वर्ग की शक्तियाँ कंप उठेंगी; परन्तु योएल के वर्णन में, जहाँ वे "चिन्ह" बताए गए हैं जो यह दर्शाते हैं कि यरूशलेम कब "पवित्र" होगा, वहाँ "स्वर्ग और पृथ्वी दोनों ही कंप उठेंगे।"

योएल उन भविष्यवाणी किए गए "चिन्हों" की पूर्ण पूर्ति की पहचान कर रहा है, जो तब घटित होते हैं जब यरूशलेम पवित्र होता है। वह समय तब है जब प्रभु ने एक लाख चवालीस हज़ार से पाप हटा दिए होते हैं, और लाओदीकिया की कलीसिया फिलाडेल्फिया के आंदोलन में परिवर्तित हो चुकी होती है। उसी समय छठा आंदोलन (फिलाडेल्फिया) सात कलीसियाओं में से आठवाँ आंदोलन (फिलाडेल्फिया) बन जाता है। उसी समय युद्धरत कलीसिया विजयी कलीसिया बन जाती है। युद्धरत कलीसिया परमेश्वर की उस कलीसिया के लिए प्रयुक्त नाम है जो गेहूँ और जंगली घास से मिलकर बनी है। विजयी कलीसिया परमेश्वर का पवित्र पर्वत है जो "पवित्र" है, और "अब उसके बीच से कोई परदेसी नहीं गुजरता।"

उठाया गया ध्वज, जो विजयी कलीसिया है और 'सात में से आठवाँ' है, तथा जो उस समय से संबंधित है जब यरूशलेम 'पवित्र' है, उसका आगमन 'चिन्हों' के साथ होता है। अपने लोगों को उस जीवन या मृत्यु वाले 'चिन्ह'—जो एक लाख चवालीस हज़ार के मुहरबंद किए जाने की पहचान कराता है—को पहचानने के लिए संदर्भ-बिंदु देने हेतु, यीशु ने पेड़ों और पेड़ के जीवन के प्राकृतिक चक्र का उपयोग किया, ताकि वह यह अत्यंत महत्वपूर्ण पाठ सिखा सके।

मसीह ने अपनी प्रजा को अपने आगमन के चिन्हों पर ध्यान रखने और जब वे अपने आने वाले राजा के संकेत देखें तो आनंदित होने की आज्ञा दी थी। 'जब ये बातें होने लगे,' उन्होंने कहा, 'तो ऊपर देखो, और अपने सिर उठाओ; क्योंकि तुम्हारा उद्धार निकट है।' उन्होंने अपने अनुयायियों का ध्यान वसंत ऋतु में कोंपलें निकालते पेड़ों की ओर दिलाया, और कहा: 'जब वे अब कोंपलें निकालते हैं, तो तुम स्वयं देखते और जान लेते हो कि अब ग्रीष्म निकट है। उसी प्रकार तुम भी, जब तुम इन बातों को घटित होते देखो, तो जान लो कि परमेश्वर का राज्य निकट है।' लूका 21:28, 30, 31। महान विवाद, 308.

जब वसंत ऋतु में पेड़ों में कोंपलें फूटने लगती हैं, तो गर्मी करीब होती है।

कटनी बीत गई, गर्मी समाप्त हुई, और हम उद्धार नहीं पाए। यिर्मयाह 8:20.

पेड़ों पर कलियाँ फूटना बताता है कि वसंत आ गया है, और तब हमें पता चलता है कि ग्रीष्म निकट है, और फसल की कटाई तो ग्रीष्म ऋतु में ही होती है।

जिस शत्रु ने उन्हें बोया वह शैतान है; कटनी जगत का अंत है; और कटनी करने वाले स्वर्गदूत हैं। मत्ती 13:39.

फसल की कटाई दुनिया के अंत में होती है। जब पेड़ों पर कोंपलें फूटने लगे, तो आपको यह जानना आवश्यक है कि दुनिया का अंत आसन्न है।

"उद्धारकर्ता की एक वाणी को दूसरी को नष्ट करने के लिए नहीं बनाया जाना चाहिए। यद्यपि उसके आगमन का दिन और घड़ी किसी मनुष्य को ज्ञात नहीं, तथापि हमें यह जानने की शिक्षा और आज्ञा दी गई है कि वह कब निकट है। हमें आगे यह भी सिखाया गया है कि उसकी चेतावनी की उपेक्षा करना, और यह जानने से इंकार करना या लापरवाही करना कि उसका आगमन कब निकट है, हमारे लिए उतना ही घातक होगा जितना नूह के दिनों में रहने वालों के लिए यह न जानना कि जलप्रलय कब आने वाला था।" महान संघर्ष, 371.

हम लूका अध्याय इक्कीस का अध्ययन अगले लेख में जारी रखेंगे।

"मैंने देखा कि पृथ्वी की शक्तियाँ अब कंपित की जा रही हैं और घटनाएँ क्रमबद्ध रूप से घटित हो रही हैं। युद्ध और युद्ध की अफवाहें, तलवार, अकाल और महामारी सबसे पहले पृथ्वी की शक्तियों को कंपा देंगी; फिर परमेश्वर की वाणी सूर्य, चंद्रमा और तारों को, और इस पृथ्वी को भी, कंपा देगी। मैंने देखा कि यूरोप में शक्तियों का यह कंप, जैसा कि कुछ सिखाते हैं, आकाश की शक्तियों का कंप नहीं है, बल्कि वह क्रोधित राष्ट्रों का कंप है।" Early Writings, 41.